मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १२३ जुलाई-२०१७

गुरु पूर्णिमा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आयोजित ऋषिकेश में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ११ ● अंक : १२३
जुलाई-२०१७

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४११५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	प्रेमानंद स्वामी का प्रादुर्भाव	०६
०४.	हे हरिकृष्ण भगवान आप अपना दर्शन दीजिये	०९
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से दिशा सूचक आशीर्वचन	११
०६.	सुखी मैं आज दर्शन करके	१४
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१६
०८.	सत्संग बालवाटिका	१८
०९.	भक्ति सुधा	२०
१०.	सत्संग समाचार	२४

अस्मदीयम्

''अने एवा सर्वोपरी जे पुरुषोत्तम भगवान तेज दयाए करीने जीवोना कल्याण ने अर्थ आ पृथ्वी ने विषे प्रगट थया थका सर्वजनना नयन गोचर वर्ते छे ने तमारा इष्टदेव छे ते तमारी सेवाने अंगीकार करे छे । अने एवा जे आ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान तेना स्वर्गमां ने अक्षरधामने विषे रह्या जे भगवान तेना स्वरुपमां कां पण भेद नथी, ए बे एकज छे । अने एवा जे आ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान ते अक्षरादिक सर्वना नियंता छे । इश्वर ना पण ईश्वर छे । ने सर्व कारणना पण कारण छे । ने सर्व अवतारना अवतारी छे । सर्वेने एकान्तिक भावे करीने उपासना करवा योग्य छे अने आओ भगवान ना जो पूर्वे घणाक अवतार थया छे ते पण नमस्कार करवा योग्य छे ने पूजवा योग्य छे ।'' (ग.अ.३८)

अपने में कुछ कमी हो या भूल हो तो इस वचनामृत को वांचकर सुधार लेना आवश्यक है । ईश्वर के भी ईश्वर ऐसे सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान हमें मिले हैं । यह कोई छोटी वात नहीं है । इसलिये अपने इष्टदेव की भजन करके माहात्म्य समझकर मोक्ष तथा कल्याण सिद्ध करलेना चाहिए । यह अवसर पुनः नहीं मिलेगा यह निश्चित है । यह समझलेना चाहिए ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

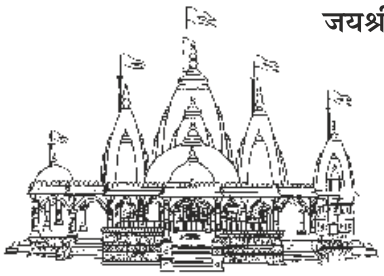

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जून-२०१७)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरवा (पंचमहाल) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण.

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अक्षरभुवन नवनिर्मित के निमित्त आयोजित ''श्री घनश्याम महोत्सव'' में गुजरात के मुख्य मंत्रीश्री विजयभाई रुपाणी साथ रहकर उत्सव की पूर्णाहुति की आरती उतारकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

९-१० श्री स्वामिनारायण मंदिर दहीसरा (कच्छ) पाटोत्सव कथा प्रसंग पर पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प.भ. जीतेन्द्रभाई एम चोकसी द्वारा आयोजित कथा की पूर्णाहुति अपने वरद् हाथों से संपन्न किये। संत महादीक्षा विधिअपने हाथों संपन्न किये।

२०-२७ अमेरिका आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो में धर्मप्रवास के लिये पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जून-२०१७)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री घनश्याम महोत्सव प्रसंग पर जांमुन लीला की आरती उतारने हेतु पदार्पण।

४ श्री घनश्याम महोत्सव प्रसंग पर अक्षरभुवन को अपने वरद् हाथों से खोल दिये।

२५ प.भ. कौशिकभाई जोषी के यहाँ पदार्पण, बोपल।

प्रेमानंद स्वामी का प्रादुर्भाव

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

प्रेम सखी स.गु. प्रेमानंद स्वामी के ३३ पीढी पूर्व उन के पूर्वज मोढेरा गाँव में रहते थे । वहाँ से २० पीढी पहले के पूर्वज जेखलो गाँव में आकर वसे । वहाँ १५ पीढी पहले के पूर्वज हाथीजण गाँव आकर वसे । वहाँ से ८ पीढी पहले के पूर्वज साणंद-विरमगाँव के बीच नलकांठा विस्तार में ओगण (सचाणा के पास) गाँव में आकर वसे । इसलिये उनकी उपाधिजेखलोजिया जानी के रुप में हुई, इसी से वे जाने जाते थे । ३७ पीढी पूर्व मूल गाँव मोढेरा होने से कुल देवी मोढेश्वर देवी, गोत्र वत्स, उपाधिजानी, वेद-यजुर्वेद, शाखा-मैत्रेय, प्रवर-पंच, भृगु-च्यवन-अल्पवान-औरव-जमदग्नि, प्रशाखा-जानी (मोढ) नैवेद्य - माघशुक्ल-८ ।

ओगण गाँव में पचीस गाँव के पुरोहित पद पर वेदपुरुष पंडित दुर्लभराम आसाराम जानी निवास करते थे । वे काशी में रहकर वेद-शास्त्र का अभ्यास करके अच्छी कीर्ति तथा राजा-महाराज से सन्मान प्राप्त किये थे । पवित्र जीवन, यजमानों को पूर्ण संतोष देनेवाले संतोषी ब्राह्मण थे । उनके वचन में बड़े-बड़े विद्वान भी विश्वास करते थे । स्वयं शिव परंपरा के उपासक होते हुये भी साकार मत में विश्वास रखते थे । उनके समय में स्वयं बहुत सारे यज्ञ-पुरश्चरण करवाये थे ।

उन्हीं के पवित्र परिवार में मोतीराम तथा शिवराम नाम के पुत्र तथा इच्छाबा एवं काशीबा नाम की दो पुत्रियां थी । मोतीराम में पिता के सभी संस्कार उतरे थे । उनका जन्म विक्रम संवत १७९० में हुआ था । मोतीराम का विवाह बलोल के आत्माराम भट्ट को पुत्री राम बाके साथ हुआ था । पिता दुर्लभराम की प्रतिष्ठा सर्वत्र थी । पिता के पास वेदाभ्यास करके सरस्वती देवी के कृपापात्र बने थे ।

मोतीराम जानी की पत्नी से (रामबा से) तीन पुत्र हुए । आदित्यराम, सूरजराम, शिवराम (आदित्यराम ही प्रेमानंद स्वामी के पिताजी) आदित्यरामजानी का जन्म वि.स. १८१८ में हुआ था । इनका विवाह शिहोली गाँव के परसोत्तम झवेरराम की पुत्री रामुबा के साथ हुआ था ।

आदित्यराम की माताजी का नाम तथा पत्नी का नाम एक ही था । माता का मायका की बलोल था तथा पत्नी का मायका शिहोली था ।

आदित्यराम मोतीराम जानी की पत्नी रामबु से

वि.स. १८४६ में अक्षरधाम के अनादि मुक्तराज प्रेमसखी प्रेमानंद स्वामी का प्रादुर्भाव हुआ था।

स्वामी के जन्म समय पिताश्री आदित्यराम जानी अपने मूल गाँव से अमदावाद में खाडियागेट के पास जलोवाली पोल में आकर रहने लगे। आदित्यराम के प्रथम पुत्र सेवकराम तथा द्वितीय पुत्र प्रेमानंद स्वामी थे। जन्म स्थल जलोवाली पोल खाडिया गेट था। स्वामी के जन्म समय षष्ठी के दिन राजाराम रखा गया। जैसे कांटो में फूल खिले और कीचड में कमल खिले ऐसी स्थिति तो हुई लेकिन उनकी कुंडली देखे तो उसमें योग माता-पिता के लिये अच्छा नहीं था। जो निश्चित होता है वही होता है। ऐसा विचार कर पिताजी आदित्यराम दिन बिताने लगे। इसी सयम छोटे पुत्र राजाराम के छ मास जन्म के बाद ही रामुबा पत्नी देवलोक में चली गई। इससे आदित्यराम के मस्तक पर बहुत बड़ा भार (आपत्ति) आ पड़ा। इसके अलांवा जन्म पत्रिका में विपरीत योग तथा लक्षण होने से मानसिक स्थिति बिगड गई। इसके अलांवा अगल-बगल वाले डराकर आग में घीडालने का कार्य करने लगे।

एकबार प्रात: काल उठकर कोई देखे नहीं इस तरह छिपकर छ महीने के पुत्र राजाराम (प्रेमानंद स्वामी) को पिता आदित्यराम जानी दरियाखान घुम्मट के पास मस्जिद के दरवाजे पर रखकर चले गये। अपने सगे सम्बन्धियों को इसकी जानकारी दे दी कि मेरा छोटा पुत्र मर गया और स्वयं तीन दिन तक अशौच का नियमपालन करके उत्तर कार्य भी कर लिये।

दरियाखान के घुम्मट में असंख्य भूत रहते थे। ऐसे भयभीत स्थान पर रात्रि के समय कोई व्यक्ति जाय तो वापस नहीं आवे लेकिन जिसे राम रखें उसे कौन चाखे।

प्रेमानंद स्वामी के जीवन में नया इतिहास रचा गया। जिस के कारण स्वामीको कितने लोग सत्संग में शंका की नजर से देखते थे।

उस समय अमदावाद खाडिया के पास हरणवाली पोल में डोशाताई मुस्लिम परिवार रहता था। उनकी दो पत्नियां थी लेकिन किसी को संतान नहीं थी। वे प्रतिदिन दरियाखान मस्जिद में नवाज पढने जाते थे। वहाँ पर खुदा के जैसा पुत्र की मांग करते। डोसाताई का धैर्य टूटता जा रहा था। समय वीतता जा रहा था। जिस दिन आदित्यराम के यहाँ शोक छा उसी दिन डोसाताई के यहाँ सूर्य उदित होने वाला था। संयोगवस उसी दिन जब डोसाताई मस्जित में नवाज पढने जा रहे थे मस्जिद के बाहर दरवाजे पर ही कपडे में लिपटा हुआ बालक दिखाई दिया। देखते ही उनके मन में हुआ कि आज खुदा ने हमारी मनोकामना पूरी कर दी।

हमें खुदा ने पुत्र दिया। मुख में प्रसन्नता की लहर दौड गई। खुदा को लाख-लाख वन्दन करके अपने घर के लिये वापस आये और चारो तरफ प्रचारित कर दिये कि हमें खुदा ने पुत्र दिया। उसका नाम ''खुदाताई'' नाम रख दिया।

प्रेमानंद स्वामी राजाराम जानी में से खुदाताई के नाम से जाने जाते थे। लेकिन यह गोपनीय वात डोशाभाई तथा खुदा के विना कोई नहीं जानता था। अक्षरमुक्त प्रेमानंद स्वामी बाल्यकाल से ही कीर्तन का गायन करते थे। भगवान जहाँ रखे वहाँ रहना इस विचार से खुदाताई मुश्लिम परिवार के घर में धीरे धीरे बढने लगे।

जन्म से संगीत में रुचि देखकर पालकपिता डोशाताई सात वर्ष तक वडोदरा में संगीत विद्या का अभ्यास करवाये। जन्मदाता आदित्यराम जानीने बारोट के पुस्तक में लिखादिया कि पुत्र राजाराम की मृत्यु छ महीने में ही हो गई। जब से पुत्र का त्याग किया तब से सुख का स्पर्श भी नहीं करपाये। चिंतामणी के

समान पुत्री को खोने वाले बाप के जीवन में पुन: प्रारब्धने साथ नहीं दिया।

डोशाताई गरम-गरम चबेना बेचने का कार्य करते थे। कोई त्यौहार-उत्सव आवे उसमें गरम-गरम चबैना बेचकर घर की गुजरान चलाते थे।

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान जेतलपुर में सं. १८६१ में १८ दिन का प्रथम अहिंसा का महाविष्णुयाग किया उस समय १८ हजार ब्राह्मणों के साथ लोग आये। उस समय डोसाताई वहाँ पर गरम-गरम चबेना बेचने के लिये पुत्र खुदाताई को साथ लाये थे। १८-२० वर्ष की उम्र वाले पुत्र के हाथ में वाइलन तथा राग सुनकर लोग एकत्रति हो जाते थे।

श्रीहरि यज्ञ में से गंगाबा के घर भोजन करने जा रहे थे। बीच में वायोलीन का स्वर संगीतमय सुनाई दिया, वहीं पर वे खड़े हो गये। बाप-बेटे दोनों की तरफ देखकर कहे कि आपका बेटा खुदा को अच्छा लगे ऐसा स्वर बजा रहा है। पुत्र तो खुदा का दिया है न ? यह बात तो मैं और खुदा ही जानते हैं कि यह खुदाताई कैसे प्राप्त हुआ है। रहस्यात्मक वात सुनकर डोशाताई श्रीहरि को खुदा समझकर उनके चरण पकडड लिये और १८ वर्ष के पुत्र को उन्हीं के हाथ में दे दिये।

''खुदा के पुत्र को खुदा रखे''। ऐसा कहकर जैसे नदी सागर में मिल जाती है वैसे खुदाताई भी श्रीहरि के चरण में शरण हो गये। उस समय उनका नाम अबोधानंद रखा गया। बाद में परम हंस की दीक्षा के बाद प्रेमानंद नाम हुआ तो आगे चल कर प्रेम सखी के नाम से जाने गये।

श्रीहरि का आश्रय करके डोशाताई अच्छे सत्संगी हो गये। मुस्लिम धर्म छोड़कर श्रीहरि के अनन्य उपासक हो गये। उनकी स्थिति समाधिनिष्ठ थी। यहाँ रहकर अक्षरधाम का वर्णन करते। जो उनके संयोग में आता उसे सत्संग कराते श्रीजी महाराज उनके घर पांचसौ परमहंसो के साथ पधारे थे। डोशाताई संप्रदाय में अग्रगण्य थे। संतो ने अपनी कीर्तन में उनके यश को गाया है।

प्रेम के सागर की तरह संत की प्रागट्य की कथा के विषय में बहुत काफी अंतर मिलता है। फिर भी सत्यता के आधार पर संशोधन करने के बाद अमदावाद में नागर ब्राह्मणो के चोपड़े में दिल्ली दरवाजा के पास परबडी को पोल में रहने वाली हसुमतीबहन बारोट के संग्राहलय में से यह सत्यता प्राप्त करके स्वामी की ३७ पीढी का इतिहास जानकर लिखा गया है। यह संकलन उनावा के वकील प.भ. असोकभाई महेता जैसे स्वामी के पूर्वाश्रम के घर की तथा कुटुंब की खोज की जिस में जलोवाली पोल में रहने वाले १०० वर्ष के मणीकाकाने इस इतिहास की पुष्टि की है।

श्रीजी महाराज इस संप्रदाय का सर्वप्रथम मंदिर अमदावाद में बनाकर श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किये। उस समय आदित्यराम जानी आये थे तथा श्रीजी महाराज ने प्रेमानंद स्वामी का परिचय कराकर बचपन की दरियाखान मस्जिद की सम्पूर्ण घटना स्मरण कराकर स्वामी के हाथ में ध्वज का चिन्ह था वह निशानी बाप को बताये थे . उस समय आहित्यराम जानीने दीक्षा लेने की विन्ती की तो श्रीहरि ने कहा कि जिसके घर में अखंड प्रभु की स्मृति करने वाले का जन्म हुआं हो वे धन्य है।

आदित्यराम शेष जीवन में श्रीहरि का भजन करके व्यतीत किये तथा प्रतिदिन मंदिर में दर्शन करने आते थे।

प्रेमानंद स्वामी संतो की पंक्ति में भोजन नहीं करते थे ''अर्थात् भगवान को भोजन कराकर के ही स्वयं भोजन करते थे।

हे हरिकृष्ण भगवान आप अपना दर्शन दीजिये

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ मञ्जुभाषिणीवृत्तम् ॥

सुरराजराज तव दर्शनं विना भगवन्नपि क्षणलवो युगायते ।
तपतां मनीषियतीनां च दुर्लभं हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥१॥
करुणानिधे कुरु कृपां सतांपते भवतो विनाशमपि संविषायते ॥
दहनायते निशि निशाकरोऽपि मे हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥२॥
मम मानसं तव वियोगपाकः परितापयत्यपि परं रमापते ॥
सुतरामसौ दहति मे तनूलतां हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥३॥
प्रियनाथ नाथ तव वीक्षणं विना कमनीयरूपमपि कुष्ठसन्निभम् ॥
रमणीयहर्म्यमपि कटोरायते हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥४॥
भवदीयवीक्षणामृते दयानिधे मरणायते जगति जीवनं मम ॥
श्रवणीयगीतमपि मे शरायते हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥५॥
अमृतादपूर्वमपि चाधिकं हरे चरितं त्वदीयमतिशान्तिदं सदा ॥
न तथापि मे भवति शान्तये भृशं हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥६॥
जगतामधिशं ममर्दशितं पुरा चरितं त्वया त्रिजगतां च पावनम् ॥
हृदि में यदास्मरति तन्न शान्तये हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥७॥
विधिशंभुशेषमुनिभिश्च गीयते चरितं शुभं तदपि दर्शनायते ॥
तव ते भजन्ति सुतनुं सुमंगलां हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥८॥
इति कृष्णवियोगिनाऽमनिशं भजतां प्रेमजनेन भाषितम् ॥
विरहाष्टकमादरादिदं पठतामाशुं तनोतुं मंगलम् ॥९॥

॥ इति योगानन्दमुनिविरचितं श्रीहरिकृष्णाष्टकं समाप्तम् ॥

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के पांचसौ परमहंसो में से मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी इत्यादि कवि थे । इसी तरह शतानंद स्वामी, वासुदेवानंद, नित्यानंद स्वामी इत्यादि संत संस्कृत विद्वान थे । वे लोग श्रीहरि की आज्ञानुसार संस्कृत भाषामें सत्शास्त्रों की रचना किये । इसी तरह कवि लोग गुजराती भाषा में कीर्तनो की रचना की इसी तरह संस्कृत के विद्वान महाराजको संस्कृत भाषा में स्तोत्र बनाकर - गाकर सुनाते, उन्हें प्रसन्न करते । बड़ी निर्भयता के साथ इस अष्टक में वर्णिराज योगानंद मुनि श्रीहरि के दर्शन न होने पर व्याकुल होकर मञ्जुभाषिणी छन्द में श्लोको की रचना किये हैं । उनके इस भाव को संस्कृत के श्लोकों से जानने का प्रयास करते हैं ।

सुरराजराज तव दर्शनं विना भगवन्नपि क्षणलवो युगायते ।
तपतां मनीषियतीनां च दुर्लभं हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥१॥

योगानंद मुनि परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना करते हुये प्रेममग्न होकर कहते हैं कि - हे त्रिलोकी के राजा इन्द्रादि देवों के भी राजाधिराज श्रीहरि आपके दर्शन किये विना एक एक क्षण मानो कई युग बीत गया हो ऐसा लगता है । मौन व्रतधारी मतियों सन्यासियों, कठोर तपस्या करने वालों को भी आपका दर्शन दुर्लभ है । ऐसे हे हरिकृष्ण नामवाले मनुष्यदेह धारी इस पृथ्वी पर विचरण करने वाले श्रीकृष्ण परमात्मा आप अपने स्वरुप का मुझे दर्शन दीजिए ॥१॥

करुणानिधे कुरु कृपां सतांपते भवतो विनाशमपि संविषायते ॥
दहनायते निशि निशाकरोऽपि मे हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥२॥

हे करुणा के सागर श्रीहरि मेरे जैसे जीव के ऊपर कृपा कीजिये । हे सत्पुरुषों के पति श्रीहरि आपके दर्शन के विना कल्याण करनेवाले भी दुःख दायक लगते हैं । रात्रि में चन्द्रमा की शीतलता की गर्मी में जैसे सूर्यकिरणें

जलाती है वैसे जला रही है। हे हरिकृष्ण महाराज नामवाले श्रीकृष्ण अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दीजिये ॥२॥

मम मानसं तव वियोगपाकः परितापयत्यपि परं रमापते ॥
सुतरामसौ दहति मे तनूलतां हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥३॥

हे परमेश्वर श्रीहरि आपके दर्शन के विना वियोग के ताप से मेरा मन भी अत्यन्त परितप्त हो रहा है। हे रमापति आप कृपा कीजिये। हे हरि मैं सत्य कहता हूँ कि मेरी यह भौतिक शरीर जिस तरह पानी के विना मछली जल जाती है वैसे यह शरीररुपी लता आपके वियोग में भस्म हो रही है। इसलिये हे हरिकृष्ण महाराज नामवाले श्रीकृष्ण अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दीजिये ॥३॥

प्रियनाथ नाथ तव वीक्षणं विना कमनीयरूपमपि कुष्ठसन्निभम् ॥
रमणीयहर्म्यमपि कटोरायते हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥४॥

हे मरेनाथ श्रीहरि आप हमारे प्रियनाथ है, आपके दर्शन के विना तो कोई सुंदर शरीर भी कुष्ठरोग जैसा लगता है। अति शांति देने वाला रमणीय पदार्थ भी मुझे विकराल राक्षसी कोटरा जैसा लगता है। इसलिये हे हरिकृष्ण महाराज नामवाले श्रीकृष्ण अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दीजिये ॥४॥

भवदीयवीक्षणामृते दयानिधे मरणायते जगति जीवनं मम ॥
श्रवणीयगीतमपि मे शरायते हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥५॥

हे परमात्मा भगवान श्रीहरि दया के सागर आपका अमृत जैसा दर्शन मरण धर्मा इस शरीर को जगत में जीने का सहारा मिल जायेगा। आपके दर्शन के विना जगत में सुनने के योग्य सुंदर गीत भी कांटा जैसे चुभता है। हे हरिकृष्ण महाराज नामवाले श्रीकृष्ण अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दीजिये ॥५॥

अमृतादपूर्वमपि चाधिकं हरे चरितं त्वदीयमतिशान्तिदं सदा ॥
न तथापि मे भवति शान्तये भृशं हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥६॥

सागर में से देव तथा दानव समुद्र मंथन करके जो अमृत प्राप्त किये उससे भी अधिक आपका चरित्रामृत की कथा में भी आपके दर्शन के विना शांति नही मिलती। इसलिये हे हरिकृष्ण महाराज नामवाले श्रीकृष्ण अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दीजिये ॥६॥

जगतामधिशं ममदर्शितं पुरा चरितं त्वया त्रिजगतां च पावनम् ॥
हृदि में यदास्मरति तन्न शान्तये हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥७॥

हे जगत के पति श्रीहरि हमे आप दिव्य तथा तीनो लोकों को पावन करने वाला चरित्र पहले ही दर्शन करा चुके हैं। परंतु मैं जब दिव्य चरित्रो का स्मरण करता हूं तो भी प्रत्यक्ष दर्शन करने जैसी शांति नही मिलती। इसलिये हे हरिकृष्ण महाराज नामवाले श्रीकृष्ण अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दीजिये ॥७॥

विधिशंभुशेषमुनिभिश्च गीयते चरितं शुभं तदपि दर्शनायते ॥
तव ते भजन्ति सुतनुं सुमंगलां हरिकृष्णकृष्ण तव देहि दर्शनम् ॥८॥

ब्रह्माजी, संभु, हजार मुख वाले शेष भी आपके दिव्य चरित्रों का गान करते हैं फिर भी इस मनुष्य देहधारी का दर्शन करने आते हैं वह इस लिये की आपकी भक्ति-उपासना मंगलकारी है। हे हरिकृष्ण महाराज नामवाले श्रीकृष्ण अपने दिव्य स्वरुप का दर्शन दीजिये ॥८॥

इति कृष्णवियोगिनाऽमनिशं भजतां प्रेमजनेन भाषितम् ॥
विरहाष्टकमादरादिदं पठतामाशुं तनोतुं मंगलम् ॥९॥

इस तरह हरिकृष्ण के वियोगी जन जो भी हैं, वे निरंतर इस पृथ्वी पर विचरण करने वाले भगवान श्रीकृष्ण के वियोग में उनके प्रेमी भक्त रात्रि-दिन गाते बोलते रहते हैं। इस अष्टक का जो आदर पूर्वक पाठ करेगा, उसका सर्वविधमंगल होगा अर्थात् उसका आत्यन्तिक कल्याण होगा ॥९॥

आइये हम सभी एसा संकल्प करें

अपने सगे, मित्र, स्नेहीजन के विवाह प्रसंग, जन्म दिन, एनिवर्सरी इत्यादि शुभ प्रसंग पर यदि अच्छी कोई भेट देना चाहते हैं तो श्री स्वामिनारायण अंक का लाइफ मेम्बर आजीवन शुक्ल भरकर रसीद को कवर में भरकर भेटं के रुप में दे। जिससे एक ही नहीं बल्कि पूरा परिवार वर्षो तक वांच सके तथा धर्ममय - सुखमय जीवन जी सके।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से दिशा सूचक आशीर्वचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापूनगर)

श्री घनश्याम महोत्सव अमदावाद (कालुपुर) मंदिर ता. ४-६-२०१७ (गुजरात राज्य के मुख्यमंत्रीश्री विजयभाई रुपाणी की उपस्थिति में) : श्री स्वामिनारायण भगवान ने निश्चित करके सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया उन्ही के प्रांगण में देव के सानिध्य में बैठे हुये सभी को धन्यवाद, विशेषरुप से रुपाणीजी को जिन्होने समय निकालकर यहाँ पधारे हैं। हम ऐसा चाहते हैं कि साहब आप यहाँ यदा कदा आते रहिए। साहब के कुछ अगत्य के गुण हैं जो मुझे अच्छे लगते हैं वह यह कि निर्मानीपना। यह प्रशंसा के लिये नहीं कहता हूँ, सत्य है। साहब में निर्णयात्मक शक्ति बहुत अच्छी है त्वरित निर्णय लेते हैं। समस्या का समाधान त्वरित हो जाता है।

बहुत अधिक समय नहीं लेना है, परंतु एक अगत्य की वात यह है कि हमारी ही संतान दुनिया में जाकर रहती हैं। आप सभी में से ही हैं। उनके लिये श्री नरनारायणदेव का मंदिर कभी खाली नहीं रहता। उन मंदिरों में कभी विवाह होता है, कभी यज्ञ हो रहा है, कभी जन्मोत्सव मनाया जाता है। गर्व के साथ कह सकता हूं कि आगामी १० महीने में अन्य ८ मंदिर श्री नरनारायणदेव की संख्या के नीचे तैयार हो रहे हैं। उस में मुख्य तो देवस्य.... ५०० एकड में होगा। विदेश जाने का कोई स्वार्थ नहीं है। जो जाकर आता है उससे पूछिये। अपनी संस्था के नीचे मंदिरो द्वारा भारतीय संस्कृति का कितना सिंचन होता है। भगवान स्वामिनारायण के संकल्प को पूरा करने के लिये सभी प्रोजक्ट, संस्था मंदिर केन्द्र में रखकर ही विदेश जाते हैं।

दूसरी अंतिम वात यह है कि श्री स्वामिनारायण भगवान सर्वप्रथम संप्रदाय में जब आये तव किसी को ऐसा नहीं कहे कि आप माला लेकर एक जगह पर बैठ जाओ और ध्यान करो। सबसे पहले कार्य क्या किये ? कूआं खोदवाये, बावली खोदवाये अन्नक्षेत्र चालू किये। प्रत्येक धर्मकार्य में मानवता होती है।

मनुषाई के विना कोई मनुष्य सीधा सीढी चढता है तो वह भगवान को पीडा कारक होता है। साहेब ! मानवता के बिना कोई धर्म चलता है क्या ? स्वामिनारायण भगवानने प्रथम मानवधर्म की वात की बाद में सभी को भगवान की तरफ ले गये। दुःखी मनुष्य का कार्य करें, जरुरत वाले की मदद करें, एक दूसरे के सहायक बनें यह बात को ध्यान में रखकर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय कार्य करता है।

संतो का अथक परिश्रम, भक्तों की तन, मन, धन की सेवा से कार्य होता है। पाचं दिन से आप लोग लाभ ले रहे हैं आप सभी को धन्यवाद विशेष तो अपने सी.एम. साहेब के साथ आये हुये मेयर साहब तथा अन्य आगन्तुक छोटे-बड़े सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद। साहब ! यदा कदां मिलते रहिये जिससे मानवता का तथा भगवान का कार्य होता रहे। इसके लिये श्रीनरनारायणदेव शक्ति प्रदान करें एसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना। राजकीय महानुभावों की विदाई - अनुपस्थिति में श्री नरनारायणदेव के आशीर्वाद से अपना कार्य होता है।

यह एक बहुत महत्व का कागज है। जिसके लिये पुनः माइक को हाथ में लिये हैं। भाषण करने के लिये नहीं लिये है, जिसके लिये सभा में बैठे हैं। यहाँ बैठकर

बहुत सारी बातें हुई होंगी लेकिन यह एक समय का एक रुयये आठ आना वाले स्टेम्प पेपर वाला ओरिजीनल कागज है। किसी के पास नहीं होगा। महंत स्वामी कहे कि केम्प छोडकर चले जायेंगे। हमने कहा कि हम सभी लोग छोडने के लिये ही एकत्रित हुये हैं। इसमें कहने की क्या बात है। हमें विश्वास है कि देव को छोड़कर कोई अन्यत्र नहीं जायेगा। इसी लिये तो हरिभक्त आधी रात को यहाँ एकत्र होरक बैठे हैं। श्री नरनारायणदेव को छोड़कर कहाँ जायेंगे।

पत्र लिखा है, संवत २००८, माधकृष्ण-६, गुरुवार ता. ५-२-५३ के दिन लिखा यह जो घनश्याम महाराज की मूर्ति मंदिर में बनाने के लिये जिन्हें जिम्मेदारी सौंपी गई थी उनके लिये यह कागज बहुत उपयोगी है। मुझे प्रातःकाल जे.के. स्वामीने दिया। कारण कि महंत स्वामी के गुरुजी के समयका लिखा गया यह कागज जे.के. स्वामी से ले लिया। महंत स्वामी को इसकी खबर नहीं इसलिये मात्र देख ही रहे थे। क्या है ? लेकिन व्यवहार तो....हास्य..... खूब कथा सुनकर थके हैं इसलिये हंस रहे हैं। यद्यपि राम स्वामी की कथा सुनने का आनंद होता है, परंतु थोडा समय के लिये आनंद भी जरुरी है।

ये छोटे संत, बड़े संत सभी मिलकर देव की सेवा करते हैं, सत्संग की सेवा करते हैं। यह सबसे बड़ी बात है। हम १००० वार कहे है और कहते रहेगें कि देव को छोड़ कर कुछ भी नहीं करना है। कोई लाल कपडा वाला हो या चाहे जो भी हो नरनारायणदेव का न होतो उसे एक लालपाई भी नहीं देना है। न देने में कोई पाप नहीं लेकिन देने में अवश्य पाप लगेगा।

लिखा है कि अक्षर भुवन में प्रतिष्ठा करते समय घनश्याम की मूर्ति के लिये मकरणा का संगमरमर पत्थर के लिये १६५१/- रुपये रखे हैं। अर्थात् इस मूर्ति की कींमत १६५१/- रुपये हैं - इसकी स्पष्टता नीचे अनुसार है-

मूर्ति बनाकर मंदिर में स.गु. चितारा स्वामी को देना। इसके लिये उत्तम प्रकार के संगमरमर के पत्थर से जो एकदम सफेद हो उसमें से मूर्ति बनाना। कितनी स्पष्टता है इसपत्र में। मूर्तिका काम सं. २००९ फाल्गुन कृष्ण रविवार को पूरा करके पोलिशका काम तथा रंग के काम की शर्त रखी जा रही है। अक्षरभुवन के प्लीन्थ तथा बैठक का काम हमारे खर्च से कीजियेगा।

ऊपर बताये हुये हिसांब के अनुसार आपके पास ५००/- रुपये एडवान्स में दिया जा रहा है। शर्त के अनुसार काम उत्तम नहीं होगा तो पैसे वापस देने होंगे। संतो अथवा पू. देवेन्द्रप्रसादजी दादा उस समय विद्यमान थे, उन्हे या वे जिसे कार्य सौंपे मूर्ति का काम संतोषजनक न हो तो काम पूरा होने पर १६५१/- के साथ एडवान्स का ५००/- रुपये वापस करके मूर्ति लेजांये। इस पत्र को इसलिये यहाँ वांचे कि इतनी निष्ठा थी सत्संग में, आज भी है। जहाँ पर देवका दस्तावेज नहीं हो वहाँ जाने की जरुरत नहीं।

हमें नरनारायणदेव मिले हैं। ये कंगाल नहीं है। अपने गाँव में, शहर में, देश में, विदेश में मंदिर हैं। हो भी रहे हैं। आवश्यकता के अनुसार मंदिर बन रहे हैं। आपके घर के बगल में मंदिर करेंगे। सत्य कहता हूँ। मंदिर श्री नरनारायणदेव का होना चाहिए। देव के विना अपना उद्धार नहीं है। अन्य जगह पर चाकचिक्य दिखाई अवश्य देगा, किसी को एसा होगा कि जो आज है वह यावच्चन्द्र दिवाकरौ तक रहेगा, लेकिन ऐसा नहीं दिन सभी का ढल जायेगा। याद रखना, हम सभी के ऊपर नरनारायणदेव की कृपा है कि स्वयं हम सभी को प्राप्त है। हम अत्यन्त पवित्र रमण रेती जैसी भूमि में लोट रहे हैं जहाँ पर महाराज सभा करते थे यह वही भूमि है। इसका आप सभी को अहोभाग्य मानना चाहिए। यहाँ पर बड़े-बड़े कार्य हुये हैं। सभी को हार्दिक धन्यवाद।

विशेष में, जीर्णोद्धार हुआ उस समय कहा गया कि मंदिर के जीर्णोद्धार का काम किया गया है तो साथ

में सिंहासन का काम भी सोना का हो जाय। मैंने कहा कि यह नहीं करना है । लकडा में उत्तम क्वालिटी का बनवाया जाये हमें तो भगवान को सुंदर देखना है। उसी में मजा है। नरनारायणदेव के मंदिर में अलग वस्तु हैं। सब की भावना थी की हमारा भी देव स्वीकार करें और सभी को योगदान करने की छूट कर दी लेकिन यहाँ पर पागल पन करने की जरुरत नहीं है। सोने की अपेक्षा लकडी महंगी होगी फिर भी काष्ठ ही मंदिर में शोभा देता है। यही अपनी परंपरा है। दर्शन करने से हृदय में आनंद होता है। श्री नरनारायणदेव स्वयं प्रतापी है। उन्हें सोना, हीरा, रुपया से क्या मतलब। अपने भगवान भी अपनी भावना से बड़े हैं। हम सभी भगवान के आशीर्वाद से बड़े हैं ? यही सच्चा सिद्धांत है। देव के चरणों में बैठकर संत-हरिभक्तजो भजन-भक्ति करते हैं । इसके लिये आप सभी को धन्यवाद।

फिर से कह रहा हूँ कि यदि आपलोग कुछ मांगने आइयेगा तो यही कागज ही मांगियेगा। इसी लिये सभा में बांचा हूँ। बाकी मुझे बहुत बोलने की आदत नहीं है। वैसे भी रात्रि के समय बाहर निकलना हमें अच्छा नहीं लगता । जल्दी उठता हूँ दोपहर में आराम नहीं करता, साढे आढ-नव बजे तक घसघसाट नींद आ जाती है। इसलिये बाहर निकला संभव ही नहीं। कथा भी रात्रि के समय नही होती। लेकिन सभी की अनुकूलता को ध्यान रखकर कथा रात्रि में भी होने लगी है। एक हरिभक्त आये कहे कि रात्रि कथा रखे हैं। आप को पधारना है। मैं कुछ बहाना ढूंड रहा था, इसलिये कहा कि हमें रात्रि में दिखाई नहीं देता। (मजाक में) वह भगत टेन्शन में आ गया। महाराजश्री ! हमे खबर नहीं थी कि आपको ऐसा हो गया है। तो आप मत पधारिये (प.पू. महाराजश्री हंसी के लिये कहे - इसे कोई सत्य न मानले) आप सभी को प्रेम है, देव में श्रद्धा है। महाराज सभी का भला करें। मंगल करें, संकल्प पूरा करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

प.पू. भावि आचार्यश्री लालजी महाराजश्रीने इस प्रसंग पर आशीर्वचन देते हुए कहा कि - आदरणीय संतो तथा हरिभक्तों, ५ - ५ दिन से चलते हुए इस घनश्याम महोत्सव में प्रातः प्रभु के दर्शन का जो आनंद आप लोगों को मिला तथा जो शांति मिली उसके पीछे यदि कोई कारण है तो संत और हरिभक्त हैं। रात्रि-दिन जागकर महोत्सव को सफल बनाने के लिये तन, मन, धन से समर्पित हो जाते हैं।

सभी धन्यवाद के पात्र हैं। एक वात याद रखने लायक है जो हम कार्य करते हैं वह नरनारायणदेव के लिये करते हैं, नरनारायणदेव का होकर करते हैं। इसमें कोई शंका का स्थान नहीं है। कितने जन्मों का पुण्य होगा कि इस पवित्र भूमि में बैठकर भजन, भक्ति करने का अवसर मिला है। इस अवसर को जाने नहीं देना है और भजन, भक्ति, सत्संग करते रहना है । महाराज सभी का भला करें और दिन प्रतिदिन सत्संग बढता रहे ऐसी प्रार्थना।

श्रावण शुक्ल-१५ पूर्णिमा का चन्द्रग्रहण पालना है

संवत २०७३ श्रावण शुक्ल-१५ ता. ७-९-१७ सोमवार को चन्द्रग्रहण है . जिस का वेधता. ७-८-१७ सोमवार को दोपहर १-४० से लगजायेगा। इसके बाद भोजन नहीं करना है। यह ग्रहण भारत, एशियाका दक्षिण प्रदेश तथा हिन्द महासागर, एटलान्टीक तथा पेसेफीक महासागर में दिखाई देगा। अर्थात् देश के समय मर्यादा में इसका पालन करना है -

ग्रहण स्पर्श - रात्रि १०-४० मिनट
ग्रहण मध्य - रात्रि ११-५० मिनट
ग्रहण मोक्ष - रात्रि १२-५० मिनट

“सुरवी मैं आज दर्शन करके”

– अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज ने अविरत विचरण किया उसका एक ही उद्देश्य था कि हमारे प्रियजोभी भक्त हों वे दर्शन का सुख प्राप्त करें। ऐसे भक्त को जब भगवान मिलें तो उसके आनंद से अधिक और क्या हो सकता है।

उससे सम्बन्धित तीन प्रसंग देखते हैं –

(१) हाथरोली के भीलराजा : जेतलपुर का सर्व प्रथम अति रुद्रयाग निर्विध्न पूरा हुआ लेकिन असुर तत्व वाले जल मरे। खोखरा से अमदावाद भीक्षा के लिये जाते हुये साधुओं को असुरोने खूब मारा। महाराज अति कोपायमान हुए। वे चारसो जितने संतो को सूरत शहर में भेंजे। शूरवीर क्षत्रियों को खोखरा बेंज कर असुरों का नाश करा दिये। कितने भाग गये। इधर महाराजने डभाण में यज्ञ का आरंभ किया। महाराज यह जानते थे कि जो पूर्व के पराजित है वे अब यहाँ के यज्ञ में निश्चित ही विध्न करेंगे। इसलिये स्वयं घोडासर होकर हाथरोली आये। हाथरोली के राजा भील थे। महाराज के हितैषी थे। उन्हें यह पता चला कि श्रीहरि पधारे हैं तो सामने से अपनी सेना लेकर महाराज से मिलने गये।

भील राजा श्रीहरि को देखकर अति भाव विभोर हो गये। महाराज ! आप हमें दर्शन दिये, हमारी भाग्य खुल गई। महाराज ! आप हमें कोई सेवा का अवसर दीजिए। महाराजने कहा कि हम डभाण में यज्ञ आरंभ किये है, इस यज्ञ में आसुरी तत्व वाले विध्न करने अवश्य आयेंगे इसलिये हमारे संतो की रक्षा के लिये सेना के साथ आप अवश्य आइयेगा।

भीलराजाने कहा कि, महाराज ! आप चिंता मत कीजिये। यज्ञ तथा संतो की रक्षा हम करेंगे। परंतु महाराज ! एक विन्ती है आप हमारे घर पधारें जिस तरह हम सुखी हुए है वैसी ही अन्य परिवार वाले सुखी हों। इसके बाद भीलराजा महाराज को पालखी में बैठाकर शोभायात्रा निकाली और गाजे बाजे के साथ अपने घर ले गया। समग्र आंतरोली के लोग श्रीहरि के दर्शन से धन्य हो गये।

धन्य धन्य महाराज आज सुखी थयां तम साथ।

(२) धर्मपुर की रानी कुशल कुंवरबा : अडालज की सुप्रसिद्ध वावली का जिन्होंने निर्माण करवाया वे थी धर्मपुर की कुशल कुंवरबा।

चैतन्यानंद स्वामी द्वारा महाराज तथा

स्वामिनारायण सत्संग की पहचान हुई थी । संतो के दैनिक जीवन से प्रभावित हुई थी ।

एकवार महाराज डभाण, वडताल, बोचासण होकर नर्मदा उतरकर उधना, चीखली, धर्मपुर पधारे । रानी दूसरे गाँव में थी । परंतु महाराज पधारे है इसलिए त्वरित वहाँ आ गई । श्रीहरि का प्रथम दर्शन हुआ था । दर्शन होते ही उनकी निष्ठा दृढ हो गई । भाव विभोर होकर हृदय द्रवित हो उठा ।

''भले पधारे महाराज'' ऐसा कहकर उनके स्वागत की तैयारी करने लगीं । उन्हें गद्दी पर बैठाकर स्वयं नीचे बैठ गई ।

महाराज मेरी बड़ी भाग्य है कि आप हमारे यहाँ पधारे । हमें अपने दर्शन का सुख दिये । हमारा जीवन धन्य हो गया । आप यही पर मेरे भी अधिपति होकर रहिये । मैं यहाँ की रानी थी, अब आप सही राजा तो आप है । आप इस राज्य की तथा प्रजा की रक्षा कीजिए । आपकी दासी बनकर मैं आपकी प्रतिदिन दर्शन कर सकूं ।

श्रीहरि अत्यन्त प्रसन्न होगये । बाद में धीरे से बोले देखो कुशल कुंवल बा हम यहाँ पर राज्य करने नहीं आये हैं । हम पृथ्वी पर विचरण करके जीवों का उद्धार करने आये हैं । यह राज्य आपका है, आप राज्य करो । राज्य करना एक उपाधिहै । उससे हम बचना चाहते हैं । बाद में बाई बोली –

हवे तमने मूकी बीजी बला कोण राखशे ।
सुधासम श्याम तमने मूकी विषकौण चाखशे ॥

(३) सूरत के पारसी अरदेशजी : एकवार महाराज बोसण, देवाण होकर मही नदी उतरक र कारेली, आमोद, बुवा, थेलोद, भरुच, अंकलेश्वर होकर कोसाल गाँव आये । यहाँ पर सामने आये हुए सूरत के हरिभक्तों को सुख देने के लिये सूरत गये ।

सुंदर शहर सूरतना सत्संगी सर्व सुजाण ।
प्रभुजी त्यां पधार्या जनहेते जीवन प्राण ॥

सुरत शहर के सुबेदार अरदेशरजी थे । महाराज सुरत में पधारे हैं यह सुनकर गाजे बाजे के साथ महाराज का स्वागत करके अपने यहाँ लाने के लिये पैदल चल कर गये ।

महाराज का दर्शन होते ही भाव विभोर होकर दंडवत करने लगे । श्रीहरि भी बहुत प्रसन्न हुए । अरदेशरजी को गले लगा लिये । महाराजने पूछा आप तन, मन से सुखी तो हैं न ? अरदेशरजी कहते हैं कि महाराज मैं आज तक सुखी नहीं था लेकिन आज आपके दर्शन से सर्वविधसुखी हो गया हूँ । बहुत दिनों से आपकी राह देखता था । आप स्वयं यहाँ आये इससे मेरा जीवन धन्य हो गया । आपके यहाँ आने से पूरा सुरत नरनारी सभी दर्शन का सुख प्राप्त कर रहा है अरदेशरजी महाराज को पालकी में बैठाकर छत्र – चमर डोलाते हुये नगरयात्रा (शोभायात्रा) निकाली । महाराज अरदेशरजी के घर पधारे । वहाँ पूजा आरती करके चरण में भेंट रखे ।

ऊपर के तीनो प्रसंग जिस में प्रथम भील पति दूसरा रानी कुवर कुशलबा, तीसरा सुरत शहर के सरदार अरदेशरजी, इन तीनो में क्या कमी थी ? ये तीनो महाराज का दर्शन करते ही जो मानसिक भाव था या जो भी उनकी चाहना थी वह पूर्ण हो गई । सभीने एक ही वात कही कि –

''सुखी छुं आज दर्शने'' केम के –
महाराज पधार्या छे मारे आंगणे ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

छोटा और बड़ा नगार।

परात्पर परमात्मा की उपस्थिति में छडी, छत्र, चामर, वाद्ययंत्र वाहन इत्यादि अखंड रहता है। कीर्तन-भक्ति करते समय वाद्ययंत्र इत्यादि उपकरणों से हृदय की उर्मियो को और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। आरती के समय शंखनाद, झालर, नगरा की ध्वनि तथा संत हरिभक्तों के उच्चरित स्वर से होनेवाली प्रार्थना सुनने वाले का हृदय झंकृत हो उठता है। एक स्वर में बजने वाली तालियों के नाद, डंका-निशान-नगारा का नाद तथा भगवान की स्तुति-प्रार्थना इस जीव के अन्तःकरण में दिल-दिमांग में छा जाती है। इसकी अनुभूति सभी को होने लगती है।

स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्व प्रथण मंदिर अमदावाद में श्रीहरि ने बनवाया तथा उसमें स्वयं के स्वरुप को जानकर श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा करके स्वयं उन देव की आरती उतारे तथा जयघोष से पूरा दिगदिगन्त व्याप्त हो गया। उस समय जिस नगारे को प्रथम वार निनादित किया गया था वही नगारा इस समय म्युझिय में सभी के दर्शनार्थ रखा गया है। यह वही नगारा है कि जिसके पर असंख्य वार श्री नरनारयणदेव की आरती के समय दंडे से निनादित हुआ होगा। अनेक संत महानुभावों के स्पर्श का शुख पाया है। ऐसा यह अति प्रसादी का नगारा है। उसके ऊपर जो चमडा मढा गया है। वह किसी विशिष्ट पुण्यात्मा का होगा। स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने स्नेह गीता कडवु-३२, कड़ी-९ में लिखा है कि -

आजीवदा तो अन्य न उच्चरे, पण मुवा पछी पारणुं कोई लेशे।
नली भूंगली - वली - वांसली करे कोय, तोय कृष्ण कृष्ण एम बोलशे ॥

यह नगारा श्री नरनारायणदेव की महिमा का जितना गान किया है, उनता तो आज तक कोई अन्य नहीं गाया होगा। इस नगारे की महिमा अजोड है वह इसलिये कि देव की प्रतिष्ठा के समय प्रथम आरती इस नगारे के वाद्य पर प्रारंभ हुई थी। वर्षो तक देव की पांचो आरती में अचूक स्वर को पूरने का काम किया है। संत-हरिभक्तों के हृदय को पुलकित किया है।

आज विजली से चलने वाले उपकरण के कारण नई पीढी को इसकी महिमा समझने में समय लगेगा लेकिन पांचो आरती के समय इतने बड़े नगारे के ऊपर जिसने डंडे पीटे होंगे यद्यवि यह बड़ा कठिन काम है फिर भी उन्हें ही इस सेवा का तुरंत ख्याल आयेगा। इस प्रसादी के नगारे का दर्शन करके ही हमे नरनारायणदेव के प्रत्येक आरती का स्मरण हो आयेगा। इससे निश्चित ही हमारा कल्याण होगा।

नगारा के पास दो घडी शांति से खड़े होकर जिसने अनेक वर्ष तक श्रीजी के जयघोष को सुना है या स्वंय जयघोष किया है उसे सुनने की कोशिश करेंगे तो उसकी अनुभूति आज भी हमें होगी। सभी हरिभक्त महिमा के साथ भाव से दर्शन करके श्री नरनारायणदेव को हृय में उतारियेगा।

- प्रो. हितेन्द्रभाई

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના સ્વરવાળી કોલરટ્યુન (ફક્ત વોડાફોન ધારકો માટે)

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના સ્વવચનવાળી કોલરટ્યુન મોબાઈલમાં ડાઉનલોડ કરવા નીચે મુજબ કરવું.

મોબાઈલમાં ct>સ્પેસ> 270930 ટાઈપ કરી. 56789 નંબર પર SMS કરવાથી કોલરટ્યુન શરૂ થશે.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जून-१७

रु। ११,०००/-	अ.नि. मगनलाल लीलाधर चौकसी, अ.नि. काशीबहन मगनलाल चोकसी, जितेन्द्रभाई मगनलाल चोकसी – पारायण प्रसंग पर (अमदावाद)
रु। १०,०००/-	शांतिलाल गोपालबाई दबासिया – मानकुवा (कच्छ)
रु। ६,५०१/-	घनश्यामलाल भट्ट – अमदावाद
रु। ६,५००/-	ध्रुव प्रेमजी देवजी वाघजीयाणी नारणपर (कच्छ)
रु। ६,०००/-	विपुल वेद – अमदावाद
रु। ५,००१/-	जागृतीबहन व्योमेशभाई शाह – अमदावाद
रु। ५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी – बोपल
रु। ५,०००/-	एक हरिभक्त बहन (जन्मदिन के निमित भेट) अमदावाद

पार्षद वर्य कानजी भगत वडताल की प्रेरणा से

रु। ११,१११/-	तेजस बिपीनभाई पटेल – आणंद
रु। ११,०००/-	मयूरभाई – बारेजावाला
रु। ११,०००/-	मयूरकुमार घनश्यामभाई पटेल – आणंद
रु। ५,०००/-	मनोजभाई – कुंडाल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - जून-१७

ता. १०-०६-२०१७	सां.यो. वसंतबा गुरु सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा (श्री स्वामिनारायण मंदिर दरबारगढ – मोरबी)
ता. ११-०६-२०१७	संजयभाई हर्षदभाई चोकसी चि. ध्वनि बहन के जन्म दिन के निमित्त (नवा नरोडा)
ता. २३-०६-२०१७	किशोरभाई शंभुभाई शेलडीया (वस्त्रापुर)
ता. २८-०६-२०१७	प्रीतेश मूलजी नाथाणी (ओकलेन्ड – न्युजीलेन्ड)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग पत्रिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

दिव्य अनुभव

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

भगवान स्वामिनारायण अपने पार्षदों के साथ झालावाड विस्तार के गाँवो में विचरण कर रहे थे। एक गाँव में महाराज प्रात:काल जल्दी उठकर अपने पार्षदों से कहे कि चलो यहाँ से चलते हैं। आगे जो तालाब आयेगा वहीं पर स्नान कर लेंगे। महाराज चल दिये। किसी गाँव के बाहर से निकल रहे थे। प्रभु अपने पार्षदों से कहते हैं कि यहाँ भी अपने भक्त रहते हैं। सामने ही उनका घर है। लेकिन उन्हें जगाना नहीं है, जागे हैं या नहीं यह देखते चलते हैं। ऐसा कहकर महाराज उनके दरवाजे के पास खडे होते हैं कि वह भक्त स्वामिनारायण.... स्वामिनारायण..... का उच्चारण करता है। उस समय श्रीहरि कहते हैं कि ''हाँ..... बोलो यह किसकी आवाज है। मैं स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण... का उच्चारण किया और सामने से कौन आवाज दिया ? उठकर दरवाजा खोला तो वहाँ पर माणकी पर सवार स्वयं महाराज पार्षदो के साथ खडे हैं। कितनी अच्छी बात है। हे प्रभु ! आप इस समय कहाँ से ? प्रात:काल, अन्धेरे में ? महाराज कहते हैं कि आपने बुलाया और हम आ गये। महाराज ! यह तो प्रतिदिन के हमारी टेव है। उठते ही – स्वामिनरायण..... स्वामिनारायण इस तरह बोलते हैं। महाराजने कहा कि हमें कोई बुलाता है तो हम हाजर हो जाते हैं। सुबह उठते भी कोई पुकारे तो हम वहाँ आ जाते हैं।

मित्रों ! यह नियम आप लोग भी रखियेगा। प्रात: उठने के साथ भगवान का नाम मुख में होना ही चाहिए। अपने इष्टदेव का नाम ओठ पर होना आवश्यक है। स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण..... मुख से उच्चरित होना चाहिए।

आप ऐसी शंका मत करना की हम प्रतिदिन स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण का उच्चारण करते हैं फिर भी स्वामिनारायण भगवान आज तक नहीं आये। इसका अनुभव एक भक्त को हुआ है – अभी वह भक्त विद्यमान है। सुबह उठते ही विछावन पर सुखासन से ५ मिनट बैठ जाता है। भगवान का ध्यान करते हैं। एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें ऐसा लग रहा था कि हमारे माथे पर कोई हाथ फेर रहा है। ध्यान में थे लेकिन उन्हें अलौकिक अनुभव हुआ कि कोई वात्सल्य भाव से मेरे मस्तक को सहला रहा है। इतनी दिव्यता का तथा आनंद का अुभव होने लगा। उस मंगलमय वातारण में मन में विचार करने लेग कि यह कौन हो सकता है। लेकिन अद्‌भुत हाथ था। चार पांच वर्ष हो गया फिर भी जह भी प्रात: काल ध्यान में बैठता तब वही अनुभव होने लगता।

मित्रो ! प्रात- उठकर अपने मन को घर के किसी भी व्यवहार में नही जोड़ना चाहिए। प्रात- उठते ही स्वामिनारायण स्वामिनारायण महामंत्र का उच्चारण करना चाहिए। मन में नहीं जोर से बोलना चाहिए। किसी को खराब लगे तो लगने देना। खराब इसलिये कि उसे अभी और भी सोना है। कितने लोग सूर्य उदय के बाद भी सोते रहते हैं। फिर भी सूर्योदय के बाद भी उठे तो स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण ..... का नाम उच्चारण अवश्य करना चाहिए। धीरे धीरे आपको भी इसका अनुभव होने लगेगा कि ब्राह्म मुहूर्त में इस तरह के ध्यान का क्या फल होता है। आपका नाम स्मरण भगवान स्वीकार करेंगे।

इसलिये प्रातः का ध्यान स्मरण करना भूलना नहीं चाहिए । स.गु. मुक्तानंद स्वामी के शब्द का सदा स्मरण करते रहना है –

रवि रहे पाछलीचार घटिका तैयें,
संत ने सयन तजी भजन करवुं ।
स्वामिनारायण नाम उच्चारवुं,
प्रगट परिब्रह्मनुं ध्यान धरवुं ।
भजन भजीए समे अन्य उद्यम करे,
नारकी थाय तो नरने नारी ॥

इसलिये हे भक्तों ! प्रात- जागकर स्वामिनारायण नाम का उच्चारण करने का नियम रखियेगा । इससे परम कृपालु परमात्मा इष्टदेव के करकमल के सुख के अधिकारी होंगे । इसके साथ ही अक्षरधाम का दिव्य सुख का भी अनुभव होगा ।

●

छोटे बालक में ऐसी हिंमत ?

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

दादाजी....दादाजी..... आप से एक वात कहूँ । आज तो स्कूल में हमारे शिक्षकने नभ मंडल – तारा मंडल के विषय में बताया । सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र इत्यादि ग्रहों के विषय में तथा सप्तर्षि, ध्रुव इत्यादि तारा मंडल की अच्छी वात की है । हमें तो बहुत आनंद आ गया है । दादाजी एकवात कहूँ ? हाँ बेटा ! दादाजी ए सभी तारा गण आकाश में धूमते हैं, लेकिन ध्रुव तारा क्यों स्थिर हैं । यह वात मेरे समझ में नही आई .

बेटा ! आज तुम्हे इस विषय में बताता हूं । श्रीमद् भागवत में ध्रुव आख्यान आता है, उसकी वात कहता हूँ तूं शांति से सुन । सुनेगा न ? हां दादाजी । भारत देश में एक राजा हो गये, उनका नाम था उत्तान पाद । उनकी पत्नी का नाम था सुनीति जिसे एक पुत्र था जिसका नाम था ध्रुव । वह ध्रुव राजा को बहुत प्यारा था । राजा जहाँ होते वहाँ ध्रुव को साथ रखते थे ।

कुछ समय के बाद राजाका विवाह सुरची के साथ हो गया । विवाह के बाद प्रथम रानी तथा पुत्र ध्रुव की कीमत घट गई ।

एक समय की बात है । राजा उत्तानपाद अपनी रानी सुरुची के साथ बैठे थे । इन दोनो से एक पुत्र था जिसका नाम उत्तम था, वह वहीं खेल रहा है । उसी समय ध्रुव भीं वहीं आ गया और अपने पिता की गोंद में ज्यौं बैठने चला त्यौं सुरुचीने उसे धक्का मारकर ढकेल दिया और कहने लगी कि तूं सुनीती का पुत्र है, तूं राजाकी गोंद में नहीं बैठ सकता, राजा की गोंद में बेठना हो तो तुम्हें मेरी कोंख से जन्म लेना पडेगा । अब तूं भगवान की तपस्या करके प्रकन्न कर तभी तेरी ईच्छा पूर्ण होगी । ध्रुव इस अपमान से दूषित हो उठा, माता सुनीती के पास जाकर अपनी सभी वात बता दी । अब वह जिद पकड लिया कि मैं अब बनमें जाकर भगवान का तप करके उन्हें प्रसन्न करेंगे । माताने बहुत समझाया लेकिन ध्रुव किसी तरह जब नहीं माना तो आशीर्वाद देते हुए मस्तक पर हाथ रखकर बन में तप करने की आज्ञा दे दी ।

छोटा बालक बन में चला जा रहा है, वह इसलिये कि तप करना है । भगवान की भक्ति कैसे करनी उसे ख्याल ही नहीं । इसलिये भगवान को भी दया आ गई । उन्होंने नारदजी को बालक का गुरु बनने के लिये भेंजा । पहले नारदजीने ध्रुव के दृढता की परीक्षा की । ध्रुव की दृढता देखकर नारदजी यमुना के तट पर तप करने के लिये भेंजे । नारदजीने जैसी पूजा विधिबताई थी वैसे ही – भूख – प्यास – गरमी – ठन्ढी, बरसात की धारा का सहन करके भगवान की भजन भक्ति, तप प्रारंभ किया । इतने छोटे बालक की इतनी दृढ भक्ति तथा कठोर तप देखकर भगवान उसके ऊपर प्रसन्न हो गये और दर्शन दिये । तप का प्रारंभ आवेश में किया था लेकिन गुरु के समागम से आवेश शांत हो गया । प्रभु ने दर्शन देकर

पेईज नं. २३

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "मानवता से आगे बढकर आध्यात्मिकता की तरफ बढना है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जब दु:ख आवे तब प्रसन्न रहना, यह कहना बड़ा कठिन है। परंतु दु:ख आने पर ऐसे कैसे रहा जा सकता है। कोई सुखी है ही नहीं। एक व्यक्ति गुरु के पास जागर कहा कि हम बड़े दु:खी है। क्या करुं ? कैसे जीवुं ? गुरुने कहा कि एक मुट्ठी नमक ले आओ, उन्होंने नमक को पानी में डालकर उसे पिला दिया। कैसा लगा ? बहुत खारा लगा। बाद में कहे कि एक मुट्ठी नमक मेरे पास ले आओ। उस नमक को तालाब में डाला और कहा कि इसे पीओ पूछा यह कैसा लगा। अच्छा लगा। कहने का मतलब कि नमक तो वही और उतना ही था लेकिन छोटे बर्तन में रखे तो खारा बड़े तालाब में डाले तो कुछ फेर ही नही पडा। इससे यह समझना चाहिए कि दु:ख आने पर हमें कैसे रहना चाहिए वह स्वंय पर निर्भर करता है। हम मन पर लेंगे तो छोटा-बड़ा दु:ख सुख का ख्याल आयेगा। मन पर नहीं लेगे तो ख्याल नहीं आयेगा। २४ घंटे हंसने वाला भी दु-खी होता है। मानना और जानना ये दो प्रक्रिया है। जानना यह अध्यात्मिक ज्ञान है। धार्मिक प्रवृत्ति करना स्थूल प्रक्रिया है। लेकिन आध्यात्मिकता के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त होना संभव है। जब व्यक्ति मानवता से ऊपर उठकर आध्यात्मिकता की तरफ चता है तो वही भक्ति में बदल जाता है। हम भगवान को जानने के लिये आये हैं। परंतु हम भूल जाते है कि किस लिये आये हैं। हम जगत को भगवान मान लेते है। हमें मनुष्य जन्म मिला है वह इसलिये कि इस जीवन को सार्थक करलें। लेकिन ऐशा होता नही है। भजन-भक्ति की जगह पर संसार के विषय वासना में तथा राग द्वेष-निद्रा में समय विता देते हैं। जिस तरह आफिस में काम करने वाला व्यक्ति आफिस में काम करता है जब आफिस से निकलता है तब आफिस लेकर नही निकलता। इसी तरह संसार में रहकर संसार से मोह नही रखना चाहिये। काम जितना आवश्यक है वह तो करना ही है लेकिन लिप्त नहीं होना है। इसी तरह अपने घर की वस्तु माथे पर लेकर जाते है, नहीं ? हमें जीवन जीने की अपनी मर्यादा बनालेनी चाहिए। वस्तु में मोह नहीं रखना चाहिए। निर्लिप्त भाव से संसार में रहकर भगवान की भजन करना चाहिए। इसी में श्रेय और प्रेय है। अन्यथा पूरा जीवन इधर उधर भटकने में बीत जायेगा। हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। हम धर्म का कार्य अवश्य करते हैं लेकिन धर्म में पाखंड नहीं आना चाहिए। हम मंदिर में जाते हैं तिलक-चंदन कते है, यह सब ठीक है परंतु मंदिर आने मात्र से भीतर की गंदकी साफ नहीं होती। उसके लिए चैतन्य होकर भीतर के भाव को जागृत करते रहने से मधुर-मधुर ध्वनि सुनाई देगी। वही मधुर ध्वनि वंशी की आवाज जैसे होकर आत्म शांति की तरफ ले जायेगी। अन्यथा भीतर के कचरे को भरे रखने से बाहर या भीतर कहीं शांति नहीं मिलेगी। अन्दर की शुद्धता से आनन्द की स्फुरणा होगी। मनुष्य जीवन सार्थक हो जायेगा। मनुष्य जीवन जीव कोटि का अन्त है। ऐसा मनुष्य जीवन प्राप्त करके भगवान को पहचान नहीं सके तो मनुष्य जन्म लेना निरर्थक हो जायेगा। इसके लिये सत्संग में जुड़ना होगा, आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलना होगा।

इस जगत के लोग श्री नरनारायणदेव इस भरत खंड के राजा हैं ऐसा जानते हैं । लेकिन जगत के लोग यहाँ तक आ नहीं सकते और हम सभी जितने समय तक चाहे बैठ सकते हैं । यहाँ कितनी शांति है । यह जानते हैं फिर भी यहाँ आने में आनाकानी करते हैं । यहाँ का वातावरण कीतना पवित्र है, खुला हुआ मोहक है । शरीर का सदुपयोग करना है हमें इसका अध्ययन करना है । हम भवसागर में हैं । हमें इस भवसागर से पार जाना है । इसलिये सदा इसका ध्यान रखना चाहिए । कि संसार की कोई भी वस्तु आपको फंसा कर पीछे ला सके । इसलिये महाराज आप सभी को अच्छी समझ दें, शक्ति दें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

●

माता पिता की महिमा

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

हम उद्धव संप्रदाय के आश्रित है । इसका मतलब हुआ कि उद्धव संप्रदा यके प्रवर्तक श्री स्वामिनारायण भगवान के आश्रित हैं । उन्हीं की आज्ञा में हमें रहना चाहिए । भगवान शिक्षापत्री में जो आज्ञा किये हैं उसीके अनुसार जीवन जीना है । सुख की इच्छा हो तो शिक्षापत्री के २१२ श्लोकों में जो आज्ञा की गई है उसका पालन करना चाहिए । महाराज की आज्ञा का लोप करने से मंगल नहीं होगा । इसलिये जो भी आज्ञा है उसका पालन आवश्यक है ।

आज शिक्षापत्री श्लोक १३९ की बात करें । उसमें स्वामिनारायण भगवानने आज्ञा की है कि हमारे आश्रित जन गृहस्थ अनपे माता-पिता गुरु तथा रोगातुर की जीवन पर्यंत सेवा केरं ।

अपने माता पिता को कभी पीडा नहीं देनी चाहिए चाहे वह शारीरिक हो – मानसिक हो या आर्थिक हो, माता पिता जिस में हो वहीं कार्य करना चाहिए . इसी में सुख समाया हुआ है ।

अष्टावक्र मुनि महान ज्ञानी थे । जब वे माता के उदर में थे तब उनके पिताजी वेद की कितनी ऋचाओं को बोलते थे । उस समय अष्टावक्र के पिता से किसी मंत्र के बोलने में भूल हो गई, इससे माता के उदर में से ही अष्टावक्र बोले, इस श्लोक का उच्चारण गलत है । पिता को बड़ा दुःख हुआ । परिणाम स्वरुप जब वे जन्मे तब आठ अंग से टेढे पैदा हुए । इसीलिये वे अष्टावक्र कहे जाते थे ।

इसलिये सभी को यह वात समझनी चाहिए कि माता पिता को भूल की भी टीका नहीं करनी चाहिए । जब ब्रह्माजी अपनी पुत्री सरस्वती के पीछे दौडे तो शास्त्रो में उसकी बड़ी निंदा हुई . लेकिन १०० पुत्रों ने जब उनकी टीका की तब उन्हें टीका करने का पाप लगा । सभी पुत्र राक्षस हो गये । इस लिये पिता की माता की कभी निन्दा-टीका-भूल नहीं देखनी चाहिए .

भीष्म पितामह अपनी माता मत्स्यगंधा-सत्यवती को एकांत में आध्यात्मिक ज्ञान सुना रहे ते, उस समय सत्यवती के दोनो पुत्र (चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य) छिपकर शंका से देखे । उसके बाद उन्हें ख्याल आया कि हमारे बड़े भाई भीष्म माता को आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश कर रहे हैं ।

इसलिये ऋषियों ने श्राप दिया जिससे चित्रांगद को क्षयरोग हो गया और वे मर गये । विचित्रवीर्य को पीपल को गौखले में जीवित जल मरना पड़ा था ।

इसलिये प्रिय सत्संगी भाई – एवं बहने कभी भी माता पिता में दोष देखना नहीं चाहिए । अन्यथा चित्रांगद तथा वीचित्रवीर्य की तरह पाप लगेगा ।

श्री व्यासजीने भागवत के छठे स्कन्धके १८ वें अध्याय श्लोक ४३/४४ में कहा है कि इस शरीर को उत्पन्नक रने वाले माता पिता के उपकार का बदला देने के लिये पुत्र के पास कोई विकल्प नहीं है । पिता की कृपा से परमेश्वर को पाया जा सकता है । पिता मन में विचार

करें उतने में जो पुत्र वह कार्य समझले और करे तो उसे उत्तम कहा जायेगा । जब पिता कहे उसके बाद करे तो पुत्र को मध्यम समझा जायेगा । जब पिता के कहने पर भी अश्रद्धा से करे तो उस पुत्र को अधम समझा जायेगा । कहने के बाद भी जो पुत्र न करे तो उसे पिता की विष्ठा समझना चाहिए ।

श्री व्यासजी भागवत के दसम स्कंधके अध्याय-४५ श्लोक ५-६-७ में लिखा है कि ''जिससे सभी पुरुषार्थ उत्पन्न करने वाली शरीर मिली है तथा जिसकी कृपा से चारो पुरुषार्थ पुष्ट होते है ऐसे माता पिता के उपकार को कभी नहीं भूलना चाहिए । उनके उपकार का बदला १०० जन्म भी कम है । जो पुत्र शरीर तथा धन से समर्थ होते हुए भी माता पिता को आजीविका नहीं देता उसके मरने के बाद वह यमलोक में जाता है और यमयातना में उसे उसी का मांस खिलाया जाता है । जो मनुष्य समर्थ होते हुए भी माता-पिता का, किसी वृद्ध कुटुम्बी का सती स्त्री का बालक पुत्र का गुरु का, ब्राह्मण का तथा शरणागत को पोषण नहीं करता वह जीवित मरे के समान है ।

माता पिता जब भौतिक शरीर देते हैं तप परमात्मा उसमें प्राण पूरित करते हैं । इसलिये परमात्मा को प्राप्त करने के लिये प्रथम माता पिता को खुश रखना चाहिए ।

जिस माता पिताने बालक को बाल्यकाल में सुख-दुःख सहन करके उसका लालन पालन किया प्रेम किया, लाडलडाया, लिखाया, पढाया विवाह किया ऐसे माता-पिता को कुछ ऐसी संतान होती हैं जो वृद्धावस्था में छोड़ देती है । अलग होकर सेवा नहीं करते । मन ही मन में दुःखी ऐसे माता पिता अन्य की शरण में या अन्य सहायता मांगते हैं । अंत में वृद्धाश्रम का आश्रय लेते हैं ।

जो माता पिता का आदरपूर्वक सेवा नहीं करते उनके उपकार को भूलकर दूर हो जाते हैं तो उनसे भगवान दूर हो जाते हैं, परिणाम स्वरुप वह नाना प्रकार की परेशानियों से घिरजाता है । ऐसे पुत्र को कृतघ्नी कहा जायेगा । भगवान कहते है कि ऐसे कृतघ्नी मनुष्य हमें कभी प्रि यनहीं लगते ।

पश्चिम देश के एक महान संत थे, उनका नाम था गुर्जिएक । इनके पास सभी लोग उपदेश सुनने आते थे । उनके आश्रम की दिवाल पर अलग अलग प्रकार के उपदेशात्मक लेख लिखे थे । जिस में लिखा ता कि ''जो अपनी माता पिका का आदर नहीं करते उनके लिये परमात्मा अपने मंदिर का द्वार बन्द कर लेता है । इस लिय माता पिता को कभी दुःखी नहीं करना चाहिए । उनकी सेवा में ही सब सुख समाया है ।

अनपी हिन्दु संस्कृति में मातृत्व - पितृत्व इस प्रकार के सुवाक्य तो लिखे ही है ।

●

सत्संग का प्रताप

- लाभुबहन मनुबाई पटेल (कुंडाल - ता. कडी)

गाँव हामापर में लालदास नाम के एक वणिक रहते थे । खेती का भी कार्य करते थे । खेती में से जो आवक होती उसका दशवाँ भाग गढपुर में गोपीनाथजी महाराज को अर्पण कर देते । भगवान की भजन करते रहते । अपना मन भगवान के रहने का घर है । लोभी का मन द्रव्य में ही रहता है । उसे स्वप्न में भी रुपये दिखाई देते हैं ।

खेत में गेहूँ अच्छा हुआ । भगवान के लिए दान भेंट के रुप में दो बोरा भरा । पूरे दिन मेहनत करने से लालदासभाई तथा कुटुंब को नींद आ गई । रात्रि में चोर आये । जो दान के लिए उसे उठाने के लिये ज्योचले त्यों एक अव्यक्त आवाज सुनाई दी । नहीं.... इधर-उधर सभी देखे लेकिन कही कोई दिखाई नहीं दिया । फिर भी चोर उस गेहूँ को उठा ले गये ।

श्रीजी महाराजने चोर की पत्नी को दर्शन दिया । पीला पीताम्बर, मस्तक पर मुकुट, गले में वैजयन्ती माला कान में कुंडल हाथ में छडी लेकर प्रकाशमें प्रभु

प्रगट हुए । प्रभु ने कहा, बहन क्या कर रही हो ? महाप्रभु मैं सो रही हूं । आपको चेतावनी देने आये हैं कि आपका पति मेरा दान का गेहूँ चुरा ले गया है । चोरी का अन्न खाओगी तो बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगी । इसके अलाँवा यमपुरी में जाना पडेगा । स्त्रीने अपने पति से कहा कि चोरी करके गेहूँ लाये हैं । जाइये जहाँ से लाये वही रख आइये ।

चोर बोरा लेकर लाल भक्त के घर आया । हम से भूल हो गई है । आपका गेहूँ चुराकर लेगया था । उसे आप ले लीजिये । मांफी मांगी बाद में लाल भगत चोर को उपदेश दिये –

क्षण भंगुर आ देह बड़े थी
अविनाशी फल लेवुंजी ।
देह धर्योते सुख दुःख आवे,
तेने बेठी लेवुंजी ॥

यह शरीर कच्चे माटीका घडा है । मिटी में मिल जाने वाला है । जीव जगत में कोई साथ नही जाता । चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है । इस क्षण भंगुर शरी रसे जितना हो सके अधिक से अधिक भगवान की भजन-भक्ति में समय विताना चाहिए । भगवान को हृदय में उतारकर अन्दर के अज्ञान को दूर करना चाहिए । अज्ञान दूर होने पर सच्ची समझ आयेगी । चोर की वृत्ति सत्संग से बदल गई । यही सत्संग का प्रताप है । बाद में लालदास भक्त दान भेंट का गेहूँ गढपुर गोपीनाथजी महाराज को अर्पण कर आये । भगवान का जो होकर रहेगा, उसकी भगवान रक्षा करते हैं ।

(अनु. पेईज नं. १९ से आगे)

वरदान मांगने को कहा लेकिन ध्रुवजी छोटे बालक थे क्या मांगे ? केवल भगवान के सामने देखते रहे । भगवान उस बालक पर प्रसन्न होकर कल्याण का वरदान दिया और उन्हें उत्तर दिशा मे आकाश में एक लोक स्थापित करके (जिसे ध्रुवलोक कहते हैं) अचल पद देकर वहाँ का राजा बना दिया ।

बेटा ! इसलिये ध्रुवतारा उत्तर दिशा में रहकर सदा चमकता रहता है । भक्त ध्रुव भगवान की भक्ति का साक्षी है । बेटा ! यह आख्यान हमें २-३ उपदेश देता है । प्रथम यहा कि भले हमारा कोई अपमान करे लेकिन भगवान का मार्ग बतावे तो वह अपना शत्रु नही वह अपना सच्चा मित्र है । सुरचीने ध्रुवजी को धक्का मारकर तप करने का मार्ग बताया तो ध्रुवजीने इस तरह के उत्तम पद की प्राप्ति हुई । दूसरी बात यह कि - भगवान की भक्ति करके भगवान को प्राप्त करने के लिये गुरुजी की आवश्यकता होती है । जिस में नारदजी मिले तो ध्रुवजी निष्ठापूर्वक भक्ति करके भगवान को प्राप्त कर लिये । तीसरी बात यह कि भगवान प्रसन्न हों और कुछ मांगने को कहें मांगा न जाय तो चाहने से कई गुना अधिक देते हैं । जैसे ध्रुवजी कुछ नहीं मांगे तो उन्हें ध्रुवलोग ही प्रदान कर दिये ।

बालमित्रों ! देखान, दादाजीने कितनी सुंदर वात कही । ध्रुव की तरह हम भी बाल्यावस्था से भगवान की भजन-भक्ति करेंगे तो भगवान की प्रसन्नता मिलेगी तथा सच्चा सुख मिलेगा ।

इसलिये अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने इस सत्संग में ऐसी अजोड़ रीति स्थापित की है कि इस संप्रदाय में छोटा बालक हो तब से भगवान की पूजा - भजन - भक्ति करने लगता है ।

हे मित्रों ! आप भी यदि प्रतिदिन प्रातःकाल पूजा न करते हों तो आज से प्रारंभ कर दीजिएगा ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा ऋषिकेशमें कथा पारायण

परब्रह्म परमात्मा सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा राजाधिराज हिमालय की गोदं में महापवित्र भागीरथी गंगा नदी के पवित्र सानिध्य में ऋषिकेश में पवित्र स्थान पर अलौकिक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का ता. २३-६-१७ से २९-६-१७ तक भव्य आयोजन संपन्न हुआ। जिस के वक्ता संप्रदा यके युवान विद्वान कथाकार स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुकुरुळ) अपनी संगीतमय सुमधुर सैली में अलौकिक कथा का श्रवण करवाये।

इस समग्र व्यवस्था में स.गु. को. स्वामी नारायणमुनिदाजी (कालुपुर) शा. दिव्यप्रकाश स्वामी (नारायणघाट) प.भ. जयरामभाई कानाणी, जिगर भावसार, अश्विनभाई, रमेशभाई कोठारी, प.भ. दासबाई इत्यादि थे।

इस प्रसंग पर पूजनीय ब्रह्मनिष्ठ संतो में पू. सगु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर) पू. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, को. जे.के. स्वामी, मुकुन्द स्वामी (महंतश्री हरिद्वार) इत्यादि संत पधारे थे।

कथा के यजमान प.भ. जशवंतभाई कांतिलाल मोदी, अ.सौ. सुशीलाबहन जशवंतलाल मोदी परिवार, धर्मकुल पूजन के यजमान प.भ. अरविंदभाई रवजीभाई दोंगा परिवार तथा संत पूजन के यजमान प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल परिवार तथा इस प्रसंग में ठाकुरजी के प्रसाद - संत हरिभक्तों की रसोई की सेवा कई हरिभक्त मिलकर किये थे। इस प्रसंग में करीब ५०० जितने हरिभक्त उपस्थित होकर प्रसंग का आनंद मलिये थे। उनेक जीवन में यह कथा पाथेय का काम करेगी। कथा के समय सभा संचालन शा.स्वा. नारायणमुनिदासजीने किया।

(को.शा. नारायणमुनि स्वामी - कालुपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीमद् भागवत सप्ताह

परमकृपालु श्री नरनारायण देवकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से एवं कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी एवं मंदिर के पुजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी एवं भंडारी जे.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री जीतेन्द्रभाई परिवार के यजमान पद पर ता. ५-६-१७ से ता. १७-६-१७ तक परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्य में मंदिर प्रसादी के विशाल चौक में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। संहिता पाठ में शा. स्वा. हरिप्रियदासजी थे। सात दिन में अलग-अलग ढंग से थाल, धर्मकुल तथा संत-वर्णी-पार्षदो को भोजन कराया गया था। कथा के समय जितने भी प्रसंग आते है श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मिणी विवाह के सभी धूमधाम से संपन्न किये गये थे। यजमान परिवार तथा उनके सगे सम्बन्धी प्रतिदिन कथा श्रवण, देवदर्शन तथा भोजन का प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए थे। प्रतिदिन अलग-अलग धामों से संत-महंत आशीर्वाद देने पधारते थे। ता. ११-६-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से पारायण की पूर्णाहुति की गई थी। कथा के समय कथा संचालन शा. नारायणमुनिदासजीने किया था। सभी प्रसंग ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि महंत स्वामी के शिष्य मंडलने व्यवस्था करके यजमान परिवार की शोभा बढाये थे। (शा. मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पेथापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज, श्री राधाकृष्णदेव को अक्षय तृतीया से ज्येष्ठ शुक्ल-१४ तक चन्दन चर्चित करके दर्शन करवाया गया था। पुजारी स्वामी घनश्यामजीवनदासजी बहुत सुंदर 'चन्दन से अलंकृत करते थे।

(शा.स्वा. धर्मप्रवर्तकदासजी - पेथापुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा हिंमतनगर मंदि के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ मंदिर में ता. ५-६-१७ एकादशी को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में बड़ी संख्या में

हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल उपस्थित होकर महंत स्वामी की कथा का लाभ लिये थे।

(जय एम. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर में २२ वाँ पाटोत्सव

इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से एवं स.गु.शा. स्वा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर का २२ वाँ पाटोत्सव ता. २८-५-१७ रविवार को धूमधाम से मनाया गया था।

पाटोत्सव के अन्तर्गत प्रातः ६ से १० तक महामंत्र की धुन ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट इत्यादि मंगलमय कार्यकमर किया गया था।

इस प्रसंग पर कालुपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी, गांधीगनर के महंत स्वामी इत्यादि संत मंडलने नियम निश्चय - पक्ष रखने के लिये उपदेशात्मक आशीर्वाद दिये थे। अंत में महादेवनगर मंदिर के आगामी ''रजत जयंती'' महोत्सव (सन २०२०) तथा श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी महोत्सव (सन २०२२) के अन्तरर्गत २ करोड ''श्री स्वामिनारायण महामंत्र लेखन की नोटबुक का विमोचन पू. महंत स्वामी द्वारा किया गया था। अंत में सभी को महाप्रसाद की व्यवस्था की गई थी। इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - महिला मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी। सभा का संचालन चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था।(कोठारी नटुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज १३० वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से प्रांतिज मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का १३० वाँ पाटोत्सव जेठ शुक्ल-२ को धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर अमदावाद, मूली, गांधीनगर, सुरेन्द्रनगर, लींबडी, रतनपर, कोटेश्वर, सापावाडा, नारणघाट, इडर मंदिर से संत पधारे थे।

श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट आरती तथा प्रासंगिक सभा में अनेक धामो से पधारे हुए संतो की प्रेरकवाणी के बाद सभा पूर्ण हुई थी. सभा संचालन गोपालजीवनदासजीने की थी। अन्य सेवा में दिनेश भगत, अनिरुद्ध भगत, मीत भगत, नवलसिंह वाघेला ते। सभी महा प्रसाद लेकर विदा हुए थे। (कोठारी स्वामी - प्रांतीज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर देवपुरा (रवारवरिया) १०४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अ.नि. स्वामी हरिस्वरुपदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर देवपुरा का १०४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १८-४-१७ को धूमधाम से मनाया गाय था। सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती अन्नकूट तथा सभा हुई थी।

श्रीहरिनाम स्मरण धुन, कथा-कीर्तन हरिभक्तों द्वारा किया गया था। उन्त में सभी के लिये भोजनादिक व्यवस्था की गई थी।(रेवपुरा गाँव कोठारीश्री तथा सत्संग मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओलपाड २२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली देश के हालार प्रान्त का हरिभक्तों का सत्संग सुंदर चलता है। यहाँ ओलपाड श्री स्वामिनारायण मंदिर के २२ वें पाटोत्सव के उपलक्ष् यमें स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ की रात्रीय सप्ताह पारायण प.भ. शांतिलाल भगत (जीरागढवाला) के वक्तापद पर हुई थी। ३५० जितने हरिभक्त कथा श्रवण - देव दर्शन - ठाकुरजी की अन्नकूट आरती, धुन-कीर्तन - जनमंगल पाठ इत्यादि कार्य किये गये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीने फोनद्वारा सत्संग वृद्धि के लिये आशीर्वाद दिया था। (शांतिलाल भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका ठाकुरजी का चंदन चर्चित दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी तथा कोठारी स्वामी की प्रेरणा से धोलका मंदिर में विराजमान देवों के वैशाख शुक्ल-३ से पूर्णिमा तक चंदन चर्चित दर्शन का लाभ सभी को करवाया गया था। इस कार्य को पुजारी स्वामी निर्मलप्रकादासजी तथा पार्षद रामेश्वर भगत द्वारा बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ धोलका वासियों को दर्शन का लाभ मिला था। जेठ शुक्ल-१५ को ठाकरुजी का केसर स्नान से दर्शन का लाभ मिला था। यहा के महंत स्वामी तथा उनके मंडलने सुंदर सत्संग की प्रवृत्ति करके धर्मकुल की प्रसन्नता प्राप्त की थी। (पुजारी सुरेशचनद्र आर.)

धोलका मंदिर में त्रिदिनात्मक घनश्याम चरित्र कथा

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से तथा धोलका मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री मुरलीमनोहर देव के सानिध् यमें ता. १७-६-१७ से १९-६-१७ तक श्री घनश्याम बाल चरित्र की कथा का आयोजन किया गया था। जिसकी वक्ता भी सां.यो. नर्मदाबा (जेतलपुरवाला) । जिन्होने अपनी मधुर शैली में वकथा करके बहनों को भाव विभोर कर दी थी।

कथा में घनश्याम महोत्सव, समूह आरती इत्यादि कार्यक्रम धूमधाम से किये गये थे। धोलका महिला मंडल

तथा मंदिर के पार्षद मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(धोलका महिला मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली आयौजित मासिक सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की प्रसन्नता से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली में ता. १८ जून रविवार को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में स्वा. भक्तिन्दनदासजीने सत्संग कथा द्वारा भक्तों को प्रसन्न किया था।

सत्संग सभा का आयोजन प्रत्येक महीने के तीसरे रवीवार को किया जाता है। जिस में भक्तलोग यजमान बनने का लाभ लेते हैं।

आगामी सत्संग सभा ता. १६ जूलाई २०१७ रविवार को संपन्न होगी। इस लिये इस विस्तार में रहने वाले हरिभक्त इस सत्संग का अवश्य लाभ लें।

(महंत वी.पी. स्वामी - अंजली)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल लूणावाडा द्वारा आयोजीत भक्तिनिधिरात्रीय पंचान्ह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल की कृपा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा (छपैयाधाम कडीयावाड) श्री नरनारयणदेव युवक मंडल द्वारा ११ जून से १५ जून तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत श्री भक्तिनिधिरात्रीय कथा स.गु.शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी । सम्पूर्ण आयोजन श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल की तरफ से किया गया था।

कथा के अन्तर्गत १४ जून को समहू महापूजा में बहुत सारे भक्त लाभ लिये थे। कथा के बाद भक्तों को भोजन की व्यवस्था की थी।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - तीख काछिया)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

सुरेन्द्रनगर शहर में पारायण

परमकृपालु भगवान श्री स्वामिनारयण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं समस्त धर्मकुल की प्रसन्नता से एवं सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ ८० फुट - ६० फुट रोड के विस्तार में सत्संग के विशेष जागृति हेतु ता. १-६-१७ से ता. ८-६-१७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स्वामी त्यागवल्लभदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी । विशाल संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर कथा का लाभ लिये थे। कथा के बाद सभी को प्रतिदिन भोजन की व्यवस्था की गई थी । सबा संचालन स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने किया था। समग्र आयोजन श्री नरनाराणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडलने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा

भगवान स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी एवं संत मंडल द्वारा प.भ. चिमनभाई माली के यहाँ सत्संग सभा की गई थी। रणजीतगढ से भक्तिहरि स्वामी हरिवंदन स्वामी, सत्यवंदन स्वामी इत्यादि संत धर्मकुल की महिमा तथा श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया में रहने को विशेष महत्व समझाया ता । सभा संचालन प.भ. नटुभाई पुजारा तथा श्रीहरि सत्संग मंडल नरसीपराना हरिभक्तोंने अच्छी तरह किया था।

(अनिल दुधरेजिया - ध्रांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

परमकृपालु भघवान श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी की प्रेरणा से ता. १३-५-१७ शनिवार को कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदरि में महंत स्वामी, नरनाराण स्वामी, डी.वी. स्वामी तथा पार्षद मूलजी भगत की उपस्थिति में श्री राधाकृष्णदेव की राजोपचार विधिसे पूजा की गई थी। जिस के यजमान विनोचंद्र पटेल थे । सभी हरिभक्त धुन कीर्तन करके श्रीहरि के स्वरुप को पालकी में रखकर शोभायात्रा निकाली थी। संतो में कथा, हनुमान चालीसा का पाठ, ठाकुरजी की आरती की थी । सभी भोजन का प्रसाद लेकर धन्य होग। (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल का आशीर्वाद से तथा मंदिर के मंत स्वामी की प्रेरणा से ३ जून शनिवार को सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक सभी हरिभक्त साथ में मिलकर भजन-धुन किये थे। नीलकंठ स्वामीने सर्वोपरि का महत्व समझाया था। धर्मकुल की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। शनिवार होने से हनुमान चालीसा तथा जनमगंल का पाठ समूह में किया गया था। (प्रवीण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (अमेरिका) के ३० वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए संत । (२) श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका में ठाकुरजी का चंदन चर्चित दर्शन । (३) कांकरिया मंदिर में राजोपचार महापूजा प्रसंग पर श्री हनुमानजी की आरती उतारते हुए अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी तथा यज्ञ की आरती उतारते हुए कांकरिया के महंत स्वामी तथा अन्य संत । (४) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में शा. स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण के यजमान प.भ. जीतुभाई मगनलाल चोकसी को प्रसादी की मूर्ति देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा यजमान परिवार की बहने ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव का चन्दन चर्चित दर्शन तथा केसर स्नान के बाद आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

प.पू. भावि आचार्य
लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
का २० वाँ प्रागट्योत्सव

मंगलकार्यक्रम

अषाढ कृष्ण-१० ता. १९-७-१७ बुधवार ।

श्रृंगार आरती प्रात: ८-५ बजे

शुभेच्छा सभा प्रात: ८-१० बजे

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद-१

प.पू.ध.धु.आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और धर्मकुळ के आशीर्वाद से

जन्मस्थान मंदिर उद्घाटन

३१ अकतूबर से ४ नवम्बर २०१७

आयोजन

बाल चरित्र पंचान्ह पारायण • ५१ कुंडी हरियाग

धर्मकुळ पूजन • महाअभिषेक • अन्नकूट

समूह महापूजा • मंदिर उद्घाटन ईवन्ट

नगरयात्रा • नारायण सरोवर की महा आरती

धर्मदेव प्राकट्योत्सव • भक्तिमाता का प्राकट्योत्सव

२३७ घंटे की अखंड धून • दाताओ का अभिवादन

संहिता पाठ • अखंड रामायण पाठ • चार वेद पाठ

आयोजक :- आयोजन कमिटी और महंत ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी, श्री स्वामिनारायण मंदिर छपिया (यु.पी.)

Praful Kharsani